धें











मीभम्हा-मुद्धा-रुगवश्चम्-परभुरागउ-भुलाभुग्व-भन्नः पी०भा मी-काष्ठी-काभकेष्टि-पी०भा एगम्ह-मी-मुद्धारणाट-भ्वाभि-मीभ०-मंभुग्वभा

मभ्उभिद्विग-म्वी-पागवलभा

Announcement regarding parayanam to be done on days of Amritasiddhi Yoga as directed by Jagadguru Shri Kanchi Kamakoti Peetadhipati Shri Shankara Vijayendra Sarasvati Shankaracharya Swamigal

Time is the basis of all actions. As is well known, actions executed at the proper time bear more fruit.

In the cyclic rotation of time, along with the bad combinations of grahas and nakshatras that indicate the probability of upcoming difficulties, good combinations that grant benefits in multiples also arise. The sages who know this subtle nature of time have done us immeasurable anugraham by telling us about this via shastram. They have shown the way to protect ourselves for times when difficulties may arise, and to attain happiness by making efforts to do good deeds in beneficial times.

Among such good combinations are the Amrita Siddhi yogas of certain weekdays and nakshatras. They are Sunday-Hasta, Monday-Mrigashirsha,

Tuesday-Ashvini, Wednesday-Anuradha, Thursday-Pushya, Friday-Revati, Saturday-Rohini.

आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा श्रानिरोहिणी च। सोमे च सौम्यं भृगुरेवती च भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगाः॥

As per the reading सामश्रवण्याम् in the same verse, Monday-Shravana is also praised as a special yoga. Good deeds performed on such yogas become especially strong in protecting and nourishing us.

For instance, in Devi Atharvashirsha, it is said भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जस्वा महामृत्युं तरित, that is, one can cross even a gruesome death by doing parayanam when Tuesday and Ashvini join.

Therefore on these potent days, Shri Acharya Swamigal instructs to perform the following Devi-related parayanas as per achara and tradition and achieve both loka kshemam and one's own kshemam.

- o Do parayana of all texts given below as far as possible.
- o If unable to do on a single day, it may be done by starting or finishing on the day with Amrita Siddhi yoga.
- This is to be done after completing snanam, sandhyavandanam and other nitya karmanushthanam.

Texts for parayanam

- 1. Durga Saptashati
- 2. Lalita Sahasranamam
- 3. Saundarya Lahari
- 4. Durga Stuti from Virata Parva of Mahabharata (see appendix)
- 5. Durga Chandrakala Stuti of Appayya Dikshitar (see appendix)
- 6. Durga Stuti from Bhishma Parva of Mahabharata (see appendix)
- 7. Durga Pancharatnam, composed by Shri Chandrashekharendra Sarasvati

Shankaracharya Swamigal, 68th Acharya of our Shri Kanchi Kamakoti Moolamnaya Sarvajna Peetam (see appendix)

- 8. Mahishasura Mardini Stotram
- 9. Abhirami Anthathi (Tamil)

Naivedyam: Dadhi-annam (curd rice)

Please do the parayanam with sankalpam as given below and receive the Grace of Guru and Devi.

॥भद्वला

भभेपा इ + पी टुर्न, हगवट्टाः एग म्या याः प्भा मिन -

- ० एन नं म्विमा १-निवृड्डि- ५वक- भिष्मा १-मिर्हित् मूर्ं,
- ० भाग्रनं णित्रकारं गर्षेट-विम्नाभ-पृष्टि-भिष्ट्रप्रभा, मणित्रक-मङ्गीनं विनामार्प्त,
- ० उद्ग-म्वर भत्र-लेक-बिभार्
- ० रुप्तरीयानं भुक्त-सनानं विभ्न-निवृद्धि-पृत्तक-मङ्कार-पृवृद्धि-म्वा विभ्न-निवृद्धिः निवृद्धेः सुभुष्मिक-मुद्दुम्प्य-प्रपृपुत्रभा, समर्जा-कार्द्धे रुः निवृद्धेतं
- ० रुपडीयानं भनुडः भनाउन-भभ्राय म्म्र-रुट्टेः मरित् मुद्रं
- भत्रियमं ग्रुप्मामा मनुषं ग्र प्राण-वन्ताणभा मुरेगु-वुकु-माप-प्यीवन-मवापुर्भा
- मभ्कः मरु-कुएभ्वानं एम्-मर्ग्न-काभ-भेष-ग्रुप-ग्रयुविण-पृत्रधार्-मिष्टुर्ग्न विवेक-वैगागृ-मिष्टुर्ग्न

[६ गा-भपु-मडी-/ल लि उप-भरुभ् नाभ-/भे नृ द्ध-लर्ज्यी-/यणि श्वित क्रुड्य गामुडि-/मक्त्व-क्रुड्य गामुडि-/६ गाम्म क्लामुडि-/भर्जिभाभ् र भित्र नी भें ३-/मिक्याभु गामि भें ३- पाम यणं क्रिम्।



विम्नावम्-भंवद्भग-मभ्उ-भिम्नि-वेग-मिनान

```
2025-04-16 Wed उण राण-वेगः (प्रक्रभा गरुः)
                   में भम् वर्ण-वेगः 12:36▶
             Mon
2025-04-21
                   वृण न्य ण-वेगः►11:45
2025-05-14
             Wed
                   भेभम्बर्य-वेगः (पुरूभा मुरुः)
2025-05-19
             Mon
2025-05-23
                   रुग्रवडी-वेगः 16:01▶
            Fri
                   रुग्रवडी-वेगः (पुरूभा मणः)
2025-06-20
            Fri
                   में भभ्गमी मु-चेगः 21:05▶
2025-07-21
            Mon
                   गुरुपृधृ-वैगः 16:42▶
2025-07-24
             Thu
                   मेभभुगमीयु-वेगः (पुरूभा ग्रङः)
             Mon
2025-08-18
                   गुरुपृष्ट्-वेगः (पुरूभा गुरुः)
2025-08-21
            Thu
                   मिनिरें जिल्ली-चेंगः 10:09▶
2025-09-13 Sat
                   भेभभ्गमी गु-चेगः ▶ 07:29
2025-09-15 Mon
                   गुरुपृधृ-वैगः►06:30
            Thu
2025-09-18
                   मिनिरें फिल्पी-चेंगः►15:18
2025-10-11
             Sat
                   म् रिट्र पु-वेगः 17:47▶
2025-10-19
             Sun
                   ठेभामिनी-वेगः 12:32▶
2025-11-04
             Tue
                   मुम्द्रिकम्-वेगः (पुरूभा मुकः)
2025-11-16
             Sun
                   रेभाम्निनी-वेगः (प्रक्रभा मणः)
2025-12-02
             Tue
                   म्रिट्रिं पु-वेगः ▶ 08:16
2025-12-14 Sun
                   वृण नुराण-वेगः 17:09▶
            Wed
2025-12-17
                   इण न्राण-वेगः (प्रक्रभा गुरुः)
2026-01-14
            Wed
                   भेभम्व~-वेगः 11:50▶
2026-01-19
             Mon
                   बृण नुराण-चेगः►10:51
2026-02-11 Wed
```

रुग रुग मद्भग एव एव एव मद्भग

2026-02-16 Mon भैभम्व" विगः (पुरूभा मरुः) 2026-02-20 Fri रुगुरवडी-वेगः 20:06► 2026-03-20 Fri रुगुरवडी-वेगः (पुरूभा मरुः)

॥यणि रिग-त्रुउ-म्जा-मुडिः॥

वैमभुयन उवा छ

विगए-नगरं रभृं गम्बभाने वृणिहिरः। मभुवन्ननभा मितीं म्नां दि-छवनिम्नरीभा॥।

वमेरा-गर-भभुउं नारावण-वर-पि्याभा। नन्-गेप-मुले एउं भङ्गलुं मुल-वन्तीभा॥॥

कंभ-विम् वल्ल-करीभभ्रालं क्यं-करीभा।
मिला-उए-विनिकिशुभाकामं पृठि गाभिनीभा॥॥

वाभ्रावम् रुगिनीं मिवृ-भालृ-विरुधिराभी। मिवृभ्रा-एगं मिवीं।पक्त-पिएक-एपिणीभी॥मा

रुपावउपत्र पृष्ट व भूगित भम्म मिकाभी। उपा व उपवम प्राप्त पद्भिगाभिव म्युलाभी॥॥

भेंदुं प्राक्त हुवे विविष्णः भेंद्र-मभुवैः। मुभवू म्मन काङ्मी राष्ट्र मिवीं मकान्यः॥॥

नभे भुवर मे तुम्र तुभावि वृद्ध-ग्राविण्य। गला क्र-भम्, मा का रिष्क-ग्रान् निरुपन नि॥॥

गरुरुष्ट गरुवर् भीन-म्लि-पवैण्य। भव्य-पिम्क-वलचे केव्यसम्म-णियिल्याः॥

रुमि हिव यम पद्म नागयण-पिग्राः। भुगुपं रक्षादं म विमहं उव पि-मिगि॥॥॥

त्र्भृम्यवि-मभात्रभ्राम्यस्याः-मभात्रनाः विरुटी विपृले ग्रन्न मत्त्रम्य-मभुयो॥०॥

भारी म भद्भाष्ट्री भुरी विमुद्धा म या कुवि। भामं पन्मुकामम् विविधानुष्युणानि मा।००॥

मुद्भला हुं भुम्राहुं कम्म हुं य विद्धिया। यन्विम्यिचन स्वि भूषिन हे विरासमा०॥ भुतुष्टेन विग्निष्ट्रण कैम-बर्चेन मैठिना। हुस्क्षेत्र-वामेन मे्णि-भुद्रण गास्टा 10311 विद्यासम्म ग्राबस्चेन हैग्निवेठ भन्नाः। प्रस्ति मिगिप-पिस्कानाभुस्थिउन विगासमा। 10411

के भारं व्उभाभाय दि-मिवं पाविउं द्वया। उन द्वं भुवमे मिवि दिम्मः प्रमुमेऽपि ग्राल्या

र्ने कृ-रब् १९४१ म् १८४१ म्

एया द्वं विएया ग्रैव भम्भी ग्र एय-५्रा भभाषि विएयं रिष्ठ वर-राद्वं ग्र माभ्रभाणा

वित्रु ये गा-म् ४ उव भा नं कि मा मुउभा। का नि का नि भन्ना-का नि मी प्-भंग्म-पमु-पिया। ०० ॥

त्रुग्नयम् कुउँमुं वर-मा काभ-गारित्ती। कारावरुग् च ग्रा द्वां मंभूरिभृति भानवा॥००॥ प्राभित ग्रा च द्वां कि प्राउँ उत्तर कुवि। न उमा म्या के कि-ग्रिश् पृद्रेष्ठ ग्राउँगि वा॥३•॥

द्भागाउ रायम द्भा उउ दे द्भागा भूरा एकैं। का गुप्तिव्रवस्तानां भगानां य भठा क्रवे। द्भृष्टिका निरुद्धानां दे गडिः प्रभा नुल्लभा॥३०॥

र्ल-प्उरल क्रिंव का गुरिश्वी ध्रा।

य भूरित भक्षा कि न स्मिन्ति है नराः॥३३॥

है की गिः मी चितिः भिम्निस्विचित्तः भग्निति है।

भृग राद्रिः प्रानिस् स्ट्रिस् का गिः बभा स्या॥३३॥

नुलंश प्र बन्ननं भेंकं पुर्-नामं एन-ब्यभा। बृप्णि भुटुं रुषं प्रैव पृष्टिउ नामविधृमि॥उम॥ भे जं राष्ट्रश् परिक्षः मरणं द्वां प्पत्वान्।
प्णउम्च यमा भूषा उत हित भ्रम्वित ॥३५॥
इंकि भा पम्भपश् कि मट्ट मट्टा ठतभू नः।
मरणं ठत मे ह्वा मर्ग्ट ठकु-तक्क्व ॥३६॥
एतं भुडा कि भा हिती हिम्मयाभाभ पाप् त्वाम्।
उपगभ् उ राष्ट्रमिहं तहानभर्ती इ॥॥३॥

मबृक्य

म्व ग एना भक्त के भमी वं व ग नं प्रे। रुविधुटुग्निगर्मेव भम्मे विस्वभुव॥३३॥ भभ प्मामान्ति हिन्दु छ्वा के 1व-वार्षिनी भी। गण्टुं निश्वस्थं कुङ्ग केंकृम मिर्मिनीं प्रााउणा रु इिः मिल्डि रास्ता पीडिं प्प्रिमि प्रक्लाभा। भड़ा-प्मामा उ में पृभागे गृं ए रुविधृडि॥३०॥ य प्रभाग्नी स्वीत्र विषय के विषय कि विषय के वि उभं उस प्रमानि गण्या वृत्रपः मुउभा।३०॥ प्वामे नगर वाऽपि भर्मे मर्-भरूरा मए तृं म् ज-का रा में भाग में गफन गिरी॥३३॥ व भूति धृति भंग रास्ता वषा कं ठवडा भूडा। न उपं म्नारं कि-गिमिन् लेक रिवधिता३३॥ इंद्रं भुँड्-वरं रुक्तं मुक्तियाद्यों का पठ्ड का। उमु भवा पि का दा पि भिम्नि या मृति पापः वा ॥ ३ म। भड़ी-प्भामाम् वः भवानी विराए-नगर भिद्धानी। न प्रमृति कुरवे नरा वा उनिवासिनः॥अभा उट्टक्त वरमः मिती वृणि श्विरभरिन् भभा। नकं तुझ म पापुनं उर्देव रागियड॥३०॥ แङित मीभन्भकारा उ विकाए-पत्रिक्ष पाद्भव-प्रवेम-पत्रिक्ष मध्भेरपृष्यः॥

॥मक्त-मुउ-म्जा-भुउः॥

मक्क्ष्य उबाग

ण रगम्- वलं म्र्युं युग्न्य मभ्यभिरुभा। मच्चनम् जिउ राय मुद्रे वयनभव्वी उपा

म्-हगवान्या

मुग्नियुद्धा भठागाठी भम्भाकिभृषि भिद्धः। परास्थाय मञ्जलं द्वान-भेड्भूदीरय॥॥॥

भक्क्ष्य उब ग

ारवभ्केंऽच्चनः मह्नु वाभ्रःवेन पीभउा। यवडीट राषाडा पार्ःभेड्भाक क्राक्क्तिः॥आ

मक्त उक्य

नभमु भिम्न-मेनानि मुद्ध भन् ग-वाभिनि। कुभागि कालि कापालि कपिले कुभू-पिङ्गले॥मा

हर्-कालि नभपुर्ह भका-कालि नभी पुर्हे। प्राप्ति प्राप्ति नभपुर्हे उपि णि वर-विकिनि॥॥

का ट्रायनि भठा-ठाग करालि विष्यय एय। मिपि-पिम्ध-प्रष्ट-एर नाना ठरण्य-ठु पिउँ॥ ॥

मह-मुल-प्रातः एक-एकि-एकिए। गेपन्भुगुरः रष्टुषु नन्-गेप-कुलेम्हव॥॥

भिष्ठिं भिक्तं - पिंचे निट्टं के मिकि पीउ-क भिनि। मह-रूम केंक-भूषि नभमुँ, भु रू । पिंचे॥ ऽ॥

उमे माकभ्रि मुँउ तुमू कैएरु-नामिनि। किरएर्वि विरुपावि मुग्रभावि नभेऽभु उ॥७॥

वैर्य-मूडि भुक्ता-पूर्षः कृक्ताः एउ-वैर्याम। एभु-कएक-ग्रेडिंध निट्टं मिन्निक्षः ज्वाण्य।। वे रक्त-विम् विम् नं भठा-निम् ग्र मिलिन भी।
भून-भाउरगवि म् ज का ग्रा-वाभिनि॥००॥
भाषा-कारः भूण ग्रेव कला काश्व भरभुठी।
भाविदी वेम्-भाउा ग्र उपा वेमान उग्रुठे॥०३॥
भुडा,भि वं भठा-मिव विमुद्धनानुराञ्चना।
स्वे रुवे भित्रं वेड्री-प्भामामा राष्ट्रि॥०३॥
कानुर-रुव-मृज्ये रुजानं ग्राल्येष् ग्र।
निट्ठं वभभि पाउन्ले वृद्धे स्विभि मानवानी॥०६॥
वं स्भूनी भेषिनी ग्र भाषा स्तीः मीभुष्वेव ग्र।

भक्त प्रावरी मैंव भाविदी एतती उषा।०५॥ उसिः पृक्षित्तिर्द्वीशिस्तर्द्वाम्याः द्वितित्ति। इतिद्वुदि-भरं भक्ष्वे वीकृमे भिम्न-मार्गणः॥००॥

भक्क्ष उक् ग्र

उउः पार्म् विस्व रुक्तिं भानव-वद्मला। मनुगिब-गउवाम गैविन्भाग्उः भि्रा०॥

मृबुग ग

 रुर रुर मद्भर एव एव एव मद्भर

न रुवं विमृड उभु भम्म गण्य-कुलाम्मि। विवाम एवभापेड वस्त्रे भृमृडि बन्ननाडां॥३३॥

म्नं उरि ग्रावमं उपा ग्रेरिविभृगृउ। भङ्गमिविष्यिति हं लङ्गीं प्रिवेडिकेवला भी॥उम्॥

म्रोगृ-उल-भभ्ने सीवस्त वस्-मउं उषा। एउस्त स्हं प्मास्टा उभया वृग्ममृ पीभउः॥उभा

यइ एम्ने म्ट्रिंडः का निस्ट इ व्हीः मीभुषा भिडिः। यँडे एम्नभुडः क्ष्मे यडः क्षम्भभुडे एयः॥३७॥ ॥७डि मीभम्मकारु रु रीभ्मपविष्य मीभम्मा-रुगवम्मीडा-पविष्य इयैविंमेऽपृष्यः॥



॥म्जा-ग्रान्कला-मुडिः॥

विषेठ्यीम्चर-पुष्टं विरुट्टी विद्वर्गः विद्वर्गः विद्वर्गः विद्वर्गः विद्वरः विद्वरंगः विद्वरंग

महुरू नेन भरभी हरू-मभुवमृ
हुन्ने रिडा हगवर्राह-पिणन-लीलाभा।
विम्नम्री विपर्धापकरण प्रमुख्य भारा भभामु भए-केए हुने दिल्ही॥॥॥

प् दि स्प्रिष् निकिउँदि स्प-मिक्-लिमैंः एकीठविम् क्रिट्यापिल-लेक-गुप्रै । मभूत्र-मभ्-निकरा प्र उद्यायण-मैंः भारा भभाषु भिक्षानु-करी प्रमुखाः॥॥

प्राल य-मैल-उनया-उन्-का नि-मभ्रान्-केमे र्रिः कुवल य-म्रुवि-ग्राक्-र्रेजः। नागायणी नभर्राजिप्य-कल्प्-वल्ली मुपी उभावज्यु मुभुनिमुभुजन्नी॥म्॥ विम्निम्नगिंड भिर्णिष गु-कगींड यमुः नगरयणीं दृषि या नग्भिका द्विष्ठानि। भुजानि पद्भरू-कुवा या भुगिद्धिक्मि म्रुक्षानि पावक-भूषिम्म मिवं कर्ष्ट उप्भी॥॥

उद्गृहि-ह्येड-जनन-मृवन द्भकानि मंग्रह्म व्यापिल-हुड-जिडा व यमाः। मृजानुम्प-निगभानु-विह्यः ५०नि डां विम्न-भाउगभाष्यम्भिष्ठिभ्वीभि॥॥॥

य वैप्रिष्ठ-प्रक्तिः स्मिन्गिः द्विष-भेर-भभयन प्रकारिङम्। स्विष्ठाभ्-स्यामात्रिष्रुप-हमाः वैपम्हः॥॥ वैपम्हः॥॥

भुकं वधीवभरविन्-रुवाधि-म्, स्भा म्वतृ हितुपमं भ्रषः मभाणिः। म्वतप्रापद्धरारीस्-भनतृ-लार्ड् उपाधि-हित-उठणीं प्णभाभि भृषुणाऽ॥

भाकिभ्रडी-उन्-ठवं प्र ठठं प्र क्रुभा मृतिभ्रडें त्रिष्ट-रभाम्च्वडार-ठ्रम्टैः । मक्षामाकड-नवाकड-केएि-भक्ष्णुः मक्षाभमा मभिराबद्ध भंग विभम्ह्राजा

एउम्चिरिश्मीपलं लिगिपउं कि यभुः

मभुष्टिउं मह्न एव निविमिउं वा।

ह्नं ए उपयि ह्मुग्मधृमिधं

म्यः प्यस्रिउ ए मबभुभं रुष्टि उप्भाणिश।

यडा-प्रस्त-मुडि-नभमुडिक्स्वित् पीडाः पिडाभक-गमम-कराम्येऽपि। उभाभिप भुक-गुल्याम्डी वपंधि उभीभ्रम् उरुलीं मरलं प्रम्मा००॥ रुर रुर महर

का गुग्न-भण्न-म्, म्ह-लगुउया ज्वभनाः भग्नाम्च वा विणि-स्पेत्तः विभम्भगन्तिः यभाः प्यम् ग्राप्तः विभम्भगन्तिः भाग्ने भम्मा भू क्रिम्म भव-स्ग उत्ता-भविद्यी॥०३॥

बच्च वर्ष भरुडि भट्ट-रुच्च प्भक्ति विद्य-बच्च ग्र विविध्य ग्र भरुपेडण्या चड्-प्राप्ट-प्रस्पतिष्ठ प्रिकारभाकः भामिभभु-स्पानी मर्गंग रुवानी॥०३॥

गण्णभ्य-प्रिउ-पत्रग-गत्न-भेकः उद्गा-गर्ज-द्ग्य-द्ग्यनाद्भया य वेगः। प्रदृत्भिता द्युभल हुउ वड्ग-प्भाद्माडा भा भे मिया भकलभपृमुठं किल्पेउ॥०म॥

पापः प्लमृ-उनयः प्नरुद्धि भाभा महापि ज्युभयभागउ उद्गीउभा। यउा-मेवनेन रुयभिन्गियावपुउं उभामि-मेव-उरुणीं मरणं गंडेजिम्॥०५॥

यह्न-णुन-सं भाषभवापृभनतु-पुर्हैः भाकाद्री उभद्भुद-पिग्रिभाष्ट्रवापः। गोपाष्ट्रनाः किल यहक्तिन-पुर्थ-भाद्राः भाभि महा रुगवदी रुवदु पुभन्नाण्ठ॥

गाउँ प्पम् छडि भव्-विमः प्पवानां उन्नेष्ठ भ्रुविष्मित्नु-द्रुत्तिः प्लेष्ठ्। वृष्ट्र ग्र उम्हा-विभाषडां प्उनं नयत्रीभा यकामभामि-स्पनतीं सगडां रुस्ट डाभाण्या

रम-काले ५ र्मे ५ र्गा-ग्रन्-कला-पुठिः। महुवैरन्भद्रया भवापर्गा-विनिव ३वे॥००॥ ॥७ठि मीभर्भयु-सीबिउन्-विरागिष्ठा र्गा-ग्रन्-कला-पुठिः मभुत्ना॥



रुर रुर मद्भर एव एव प्रच मद्भर

$\| \mathbf{L}_{1} \mathbf{T}^{T} - \mathbf{V}_{1} \mathbf{F} - \mathbf{V}_{2} \mathbf{F} + \mathbf{V}_{1} \mathbf{F} \right\|$

उ पृप्त-वेगान्गरा म्यम्ना द्वामेव मितीं भगलानि गुम्माना द्वामेव मित्रः प्रमिन्नगम् भं पालि भविन्नि भेक्मार्शिणा

रिवाद्ममितिः म्डि-वाकृ-गीडा भन्निः नेकम् प्रः प्मदा। गुन्न परं देभ भडः प्डिष्ठा भंगपन्नि भवस्य सिक्साद्मिश।

पराजम् मितिविविचैव म्यमे

म्वाप्त न्या ने स्विच स्वि।

भाषा विकी स्वान किया उँ

भाषा पालि भविम्विवि भेवसा दि॥॥॥

रिवाक्ममब्नि मिवाक्महुडा यड़ी कुक्मवायव्यव्याः वं पाम-विक्किर-क्री प्मिम्न भंग पालि भविष्ठि भेक्साद्वि॥म्॥

तं रक्न-प्रमु विविण भग्नी
रक्न-प्रिष्ठाःमृपि स्मिगीडा ।
स्न-भुरुपाञ्च उयाः गिपलानां
भा पालि भविम्नि भेक्सा दि॥भ॥

॥ ७ाउ मी-का फ्ली-का भके एि-भुला भाषा-भाषाः पीण पीम्राः मीभन्मका मे वेन्-भगभ्राः मी प्रगण्णाः वेग पि वेहः मीभस्नन् मापर न्-भगभ्राहः विराधि उं म्जाः-पक्तः-भागः॥



कायन वाग्रा भनमिति यैवा वृद्धा प्राज्यान वा प्तरः भ्रष्टा वारा। करीभि यद्धा यदा मकलं परम् नारायण्यादि मभर्याभा

